Koti Devi Devta
28 February 2018 at 22:16 ·

बगलामुखी कल्प विधान,,,,
माँ बगलामुखी कल्प विधान द्वारा मनुष्य किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान , जीवन के हर छेत्र में उन्नति , विद्याप्राप्ति ,बाधा निवारण ,शत्रु संघार ,बीमारी दुर्घटना से बचाव ,कोर्ट कचहरी के मुकदमे मैं विजय की प्राप्ति ,आदि हर कार्य केलिए अचूक साधन है। इसका प्रयोग नियम से करें मुझे पूर्ण विश्वाश है माँ की कृपा से आपके कार्य सिद्ध अवश्य होंगे।
इसमें माँ बगलामुखी का सर्वांग पूजन आगे दी विधि के अनुसार करें। सर्वप्रथम 3 बार मूलमंत्र से प्राणायाम करें बाएं नथुनेसे धीरे-धीरे सांस खींच कर उसे तब तक रोके रहे जबतक छटपटाहट महसूस न होने लगे फिर इसे दांए नथुने से धीरे-धीरेबाहर छोड़े पुनः दांए से खींचकर बाए नथुने से सांस छोडें यह एक प्राणायाम हुआ, इस प्रकार तीन बार कर, मूल मंत्र का108बार जाप कर, दिग्बन्धन के समय सम्बन्धित दिशा में चुटकी बजाए-
दिग्बन्धन
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं श्यामा माँ पूर्वतः पातु। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं आग्नेय्यां पातु तारिणी।। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं माहविद्या दक्षिणे तु। ऊ ऐं ह्लीं श्रींनैर्ऋत्यां षोडशी तथा।। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं भुवनेशी पश्चिमयाम्। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं वायव्यां बगलमुखी।। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं उत्तरे छिन्नमस्ताच। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं ऐशान्यां धूमावती तथा।। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं ऊर्ध्व तु, कमला पातु। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं अन्तरिक्षं सर्वदेवता।। ऊँ ऐं ह्लीं श्रींअद्यस्तात् चैव मातङगी। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं सर्वदिग् बगलामुखी।।
विनियोग - विनियोग बोल कर जल पृथ्वी पर डाले। दांए हाथ में जल लेकर
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं ब्रह्मास्त्र सिद्ध प्रयोग स्त्रोत मन्त्रस्य भगवान नारद ऋषिः,अनुष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्रं बीजम् ई शक्ति, लंकीलकं, मम सर्वार्थ-साधन-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।
फिर सम्बन्धित स्थानो को छुए
ऊँ भगवते नारदाय ऋषये नमः शिरसि , ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः श्यामा देव्यै नमः ललाटे। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः तारा देव्यैनमः कर्णयोः। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः महा विद्यायै नमः भुरवोर्मध्ये । ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः षोडशी देव्यै नमः नेत्रयो। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः श्री बगला मुखी देव्यै नमः मुखे। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः बगला भुवनेश्वरीभ्यां नमः नासिकयोः। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः छिन्न मस्ता देव्यै नमः नाभौ। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लःधूमावती देव्यै नमः कटयाम्। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः कमला देव्यै नमः गुह्ये। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः श्री मातंगी देव्यै नमःपादयो। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः बीजाय नमः नाभौ। ऊँ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः कीलकाय नमः सर्वाङगे। मम सर्वार्थ साधनेबगला देव्यै जपे विनियोगः नमः । (जल पृथ्वी पर डाल दे)।
करन्यास
ऊँ ह्लां बगलामुखी अडगुष्ठाभ्यां नमः। ऊँ ह्लीं बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः। ऊँ ह्लूं बगलामुखी मध्यमाभ्यां नमः। ऊँ ह्लैंबगलामुखी अनामिकाभ्यां नमः। ऊँ ह्लौं बगलामुखी कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ऊँ ह्लः बगलामुखी करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।
हृदयदिन्यास
ऊँ ह्लां हृदयाय नमः। (हृदय को दांए हाथ से स्पर्श करें) ऊँ ह्लीं बगलामुखी शिरसे स्वाहा।(सिर का स्पर्श करें) ऊँ ह्लूं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। (शिखा का स्पर्श करें) ऊँ ह्लैं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। (कवच बनाएं) ऊँ ह्लौं जिह्वां कीलय्नेत्राय वौषट। (नेत्रों का स्पर्श करें) ॐ ह्लः अस्त्राय फट (सिर के पीछे से, दाए हाथ से चुटकी बजाते हुए, दांए हाथ की गदेलीपर, बांए हाथ की तर्जनी व मध्यमा से तीन बार ताली बजाए।)
कवच - दांए हाथ की उंगलियाँ बाए कंधे पर रखे व ठीक इसका उल्टा अर्थात् बांए हाथ की उगलियाँ दाहिने कंधे पर रखे,इस भांति सीने पर कवच की मुद्रा बनाते हैं।
ध्यान
सौवर्णासन -संस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङग- रूचिं शशाङक- मुकुटां सच्चम्पक-स्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गर
-पाश- वज्र- रसनाः संविभ्रतीं भीषणाम ।
व्र्याप्ताङगीं बगलामुखी त्रि-जगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत।।
यन्त्रोद्वार
त्रिकोणं चैव षट्-कोणं, वसु-पत्रं ततः परम्।
पुनश्च वसु-पत्रं, वर्तुलं च प्रकल्पयेत्।।
षोडशारं ततः पश्चात्, चतुरस्त्रं विधीयते।
वर्तुलं चतुरस्तं च, मध्ये मायां समालिखेत्।।
नोट माँ बगलामुखी के उपरोक्त यन्त्रोंद्वार वाला ही यंत्र प्रयोग करें, बाजार में इनकेविभिन्न प्रकार के यंत्र मिलते हैं।इसकी विधिवत् प्राण प्रतिष्ठा कर, सर्वांग पूजन करते हैं। पीले वस्त्रपर प्राण प्रतिष्ठित यंत्र स्थापित कर जहाँ-जहाँ पूजयामि हैवहाँ-वहाँ पुष्प की पंखुडियाँ सामने प्लेट मेंडालते जाए व तर्पयामि भी जल से करते रहें।
आदौ-त्रिकोण देवताः पूजयेत्
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं क्रोधिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं स्तंभिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।

ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं चामर धारिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
पुनस्त्रि कोणे
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं ओडयान पीठाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं जालन्धर पीठाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं कामगिरि पीठाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं अनन्त नाथाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।ऊँ ऐं ह्लीं श्री कण्ठ नाथाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं दन्तात्रेय नाथाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
अथ षट्कोणे
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं सुभगायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं भग वाहिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लींश्रीं भग मालिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं भग शुद्धायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं भगपत्न्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
अथ वसुपत्रे
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं ब्राह्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं माहेश्वर्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रींकौमार्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं वैष्णव्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं वाराहौ स्वाहापूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं इन्द्राण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं चामुण्डायै स्वाहा पूजयामि नमःतर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
अथ द्वितीय वसुपत्रे -
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं जयाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं विजयाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं अजिताय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं अपराजिताय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं जृम्भिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं स्तम्भिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं मोहिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं आकर्षिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
अथ पत्राग्रे
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं असिताङग भैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं रूरू भैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं चण्ड भैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं क्रोध भैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं उन्मन्त भैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं कपालि भैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं भीषण भैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं संहार भैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
षोडश दले
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं बगला मुख्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं स्तम्भिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं जृम्भिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं मोहिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं चचलाये स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं अचलायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं वश्यायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं कालिकायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं कल्मषायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं छात्रयै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं काल्पान्तायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं आकर्षिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं शाकिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं अष्ट गन्धायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं भोगेच्छायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं भाविकायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
मन्त्र पाठ -108 बार पाठ कर, स्त्रोत का पाठ करें।
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं बगला मुखि सर्व दुष्टानां वश्यं कुरू कुरू कलीं कलीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा। ऊँ ह्लीं बगलामुखि श्रीबगलामुखि दुष्टान् भिन्धि भिन्धि, छिन्धि छिन्धि, पर मन्त्रान् निवारय निवारय, वीर चंक्र छेदयछेदय, वृहस्पति मुखं स्तम्भय स्तम्भय, ऊँ ह्रीं अरिष्ट स्तम्भनं कुरू कुरू स्वाहा, ऊँ ह्लीं बगलामुखि हुंफट् स्वाहा। (108 बार पाठ करें)
स्त्रोत्र
ब्रह्मास्त्रां प्रवक्ष्यामि बगलां नारद सेविताम्।
देव गन्धर्व यक्षादि सेवित पाद पङकजाम्।।
त्रैलोक्य स्तम्भिनी विद्या सर्व शत्रु वशङकरी आकर्षणकरी उच्चाटनकरी विद्वेषणकरी जारणकरीमारणकरी जृम्भणकरी स्तम्भनकरी ब्रह्मास्त्रेण सर्व वश्यं कुरू कुरू ऊँ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।
ऊँ ह्लां द्राविणि द्राविणि भ्रामिणि भ्रामिणी एहि एहि सर्व भूतान् उच्चाटय उच्च्चाटय सर्व दुष्टान् निवारयनिवारय भूत प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनीः छिन्धि छिन्धि, खड्गेन भिन्धि भिन्धि मुद्गरेण संमारयसंमारय, दुष्टान्, भक्षय-भक्षय, ससैन्यं भूपतिं कीलय मुख स्तम्भनं कुरू कुरू ऊँ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।
आत्म-रक्षा ब्रह्म-रक्षा, विष्णु-रक्षा रूद्र-रक्षा, इन्द्र-रक्षा, अग्नि-रक्षा, यम-रक्षा, नैर्ऋत-रक्षा, वायु-रक्षा, कुवेर-रक्षा, ईशान-रक्षा, सर्व-रक्षा, भूत-प्रेत, पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-रक्षा-अग्नि वैताल-रक्षा गण-गन्धर्व-रक्षा, तस्मात् सर्वरक्षां कुरू कुरू, व्याध्र-गज-सिंह रक्षागण तस्कर-रक्षा, तस्मात् सर्व बन्ध्यामि ऊँ ह्लां बगलामुखि हुँ फट् स्वाहा।
ऊँ ह्लीं भो बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिंविनाशय ह्लीं ऊँ स्वाहा।
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं बगलामुखि एहि-एहि पूर्व दिशायां बन्धय-बन्धय इन्द्रस्य मखंस्तम्भ-स्तम्भ इन्द्र शास्त्रं निवारय निवारय सर्व सैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ऊँह्लीं वश्यं कुरू कुरू ऊँ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।
ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं पीताम्बरे एहि-एहि अग्नि दिशायां बन्धय-बन्धय अग्नि मुखंस्तम्ीय स्तम्भय अग्नि शस्त्र निवारय निवारय सर्व सैन्य कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दयमर्दय ऊँ ह्लीं वश्यं कुरू कुरू ऊँ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

Author

Koti Devi Devta

ॐ ह्लां द्राविणि द्राविणि भ्रामिणि भ्रामिणी एहि एहि सर्व भूतान् उच्चाटय उच्चाटय सर्व दुष्टान् निवारयनिवारय भूत प्रेत-पिशाच-डाक िनी-शाकिनी: छिन्धि छिन्धि, खड्गेन भिन्धि भिन्धि मुद्गरेण संमारयसंमारय, दुष्टान्, भक्षय-भक्षय, ससैन्यं भूपतिं कीलय मुख स्तम्भनं कुरू कुरू ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

1

3 yrs Like Reply More

Bhoomi Kadel

ॐ क्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पंद स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि विनाशय विनाशय क्लीं क्लीं ह्लीं स्वाहा।

1

3 yrs Like Reply More

Pradeep Shukla

जय माँ बगलामुखी

9 mths Like Reply More

View more comments...